भजन

तर्ज :– हाल क्या है दिलों का

आपका दर तो मेहरों का भण्डार है
आके दामन हमीं ने बढ़ाया नहीं।
बख्शे जाते हैं सजदे में सारे गुनाह
आके सजदा हमीं ने बजाया नहीं।

1.) तेरी नजरें–करम का किनारा नहीं
तेरा जलवा नहीं तो नजारा नहीं
अर्श करके दिलों को तो बैठे धनी
सर झुका कर के दीदार पाया नहीं, आपका दर तो मेहरों.

2.) धनी नूरे–जमाल धनी हैं बेमिसाल
क्या सुनायें तुमें जानते सब हवाल
आप बसते हो सहरग से नजदीक पर
रूह की आवाज से तो बुलाया नहीं, आपका दर तो

3.) पाक दिल की सदायें तो होती कबूल
तुमको जाना जुदा ये हमारी है भूल
बख्शी जाती हैं न्यामत अर्श की यहाँ
मैं–खुदी को हमीं ने मिटाया नहीं,आपका दर तो मेहरों..